मर्लिन मुनरो एक मॉडल, अभिनेत्री और गायिका भी थीं। वे 20 वीं सदी की सबसे प्रसिद्ध महिलाओं में से एक थीं, जो अपनी सुंदरता और सफलता के अलावा अपने बिंदासपन के लिए भी जानी जाती थीं। उनके कई चर्चित कैमरा पोज आज भी दीवारों पर सजे दिखते हैं। उन्हें अमेरिकी संस्कृति में व्यापक रूप से सबसे प्रभावशाली लोगों में से एक माना जाता है। अनाथ आश्रम में पली-बढ़ी मर्लिन कभी बेहद शर्मीली इंसान थीं, जो बाद में एक बिंदास गर्ल के नाम से फेमस हुईं। हॉलीवुड की मधुबाला कही जाने वाली मर्लिन मुनरो की जिंदगी तमाम उतार-चढ़ावों और रहस्यों से भरी है।

नूर हिना खान
लेखिका

हॉलीवुड की मिथ मर्लिन मुनरो

प्रेम जीवन और विवाद

मर्लिन के निजी जीवन में उतार-चढ़ाव काफी थे। उनकी तीन शादियां रहीं:

- James Dougherty- जब वह बहुत युवा थीं, इस शादी से जीवन आसान नहीं रहा।
- Joe DiMaggio - प्रसिद्ध बेसबॉल खिलाड़ी से 1954 में शादी की, लेकिन यह रिश्ता एक साल बाद टूट गया।
- Arthur Miller - प्रसिद्ध नाटककार से 1956 में शादी हुई, लेकिन 1961 में अलग हो गए।

प्रारंभिक जीवन

मर्लिन मुनरो का जन्म 1 जून 1926 को लॉस एंजिल्स, कैलिफोर्निया, अमेरिका में हुआ था। उनका असली नाम नोर्मा जीन मॉर्टेंसन/नोर्मा जीन बेकर था। उनका बचपन बहुत कठिन था। उनकी मां मानसिक रूप से अस्वस्थ थीं, जिसके कारण मर्लिन को कई पालक परिवारों और अस्थायी घरों में रहना पड़ा। इस अस्थिरता ने उनकी जिंदगी पर गहरा प्रभाव डाला और बाद में उनकी भावनात्मक संघर्षों का हिस्सा बन गया।

करियर की शुरुआत और सफलता

मर्लिन ने शुरुआत में एक फैक्ट्री में काम किया और फिर मॉडलिंग की दुनिया में कदम रखा। जल्द ही उन्हें फोटोग्राफी वर्क के जरिए फिल्मों में अवसर मिला। उन्होंने 1946 में 20th Century Fox के साथ एक छोटा करार किया और "मर्लिन मुनरो" के नाम से पर्दे पर अपना करियर शुरू किया। उनकी पहचान ग्लैमर क्वीन के रूप में उभरती गई, खासकर 1950 के दशक में जब उन्होंने कई बड़ी सफल फिल्मों में अभिनय किया।

- Gentlemen Prefer Blondes (1953)- यह उनकी पहली बड़ी सफलता थी।
- How to Marry a Millionaire (1953)- इसने उन्हें और प्रसिद्ध किया।
- The Seven Year Itch (1955)- यह फिल्म आज भी मर्लिन की सबसे आइकॉनिक तस्वीरों में से एक का कारण है, जिसमें उनका सफेद ड्रेस वाला दृश्य बेहद प्रसिद्ध हुआ।
- Bus Stop (1956)- आलोचकों से सराहना मिली।
- The Prince and the Showgirl (1957)- उन्होंने इस फिल्म को अपने प्रोडक्शन कंपनी के जरिए भी बनाया।
- Some Like It Hot (1959) - यह एक कॉमिक मास्टरपीस मानी जाती है।
- Let's Make Love (1960) - साधारण समीक्षाएं मिलीं।
- The Misfits (1961) - उनकी आख़िरी पूरी फिल्म।

पुरस्कार और लोकप्रियता

- मर्लिन मुनरो को Academy Award (Oscar) कभी नहीं मिला और उन्होंने Oscar के लिए भी नामांकन नहीं पाया। यह बात बहुतों के लिए चौंकाने वाली है, क्योंकि वह उस समय की सबसे बड़ी स्टार थीं।

फिर भी उन्होंने कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए।

- Golden Globe Award - Some Like It Hot के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री (कॉमेडी/म्यूज़िकल)
- कई Henrietta Awards, Photoplay Awards और Critics Awards भी जीते।
- The Prince and the Showgirl के लिए इटली का "David di Donatello Award" भी हासिल किया।

हालांकि ऑस्कर नहीं मिला, लेकिन उन्होंने Golden Globe समेत उद्योग में कई प्रमुख प्रतिष्ठान मान्यता हासिल की।

संघर्ष और निजी समस्याएं

मर्लिन के जीवन के नीचे गहरा दर्द और संघर्ष था। वे हर समय अपनी छवि और खुद की असुरक्षा से जूझ रही थीं। ड्रग्स पर निर्भरता और मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं थीं। जीवन भर अस्थिर भावनात्मक स्थिति और कई गर्भपात के कारण उन्हें गहरा दुख हुआ। इस सबके बावजूद उन्होंने अपने अभिनय और ग्लैमर से विश्वभर में एक अमिट पहचान बनाई।

मौत और विरासत

5 अगस्त 1962 को मर्लिन मुनरो को लॉस एंजेलिस में उनके घर में मृत पाया गया। यह मौत बार्बिट्युरेट्स (स्लीपिंग पिल्स) का ओवरडोज थी और इसे "संभवत: आत्महत्या" (probable suicide) करार दिया गया। उनकी मृत्यु के बाद भी चर्चा जारी रही। कुछ लोगों ने साजिश की अटकलें लगाईं, खासकर उनके कथित संबंधों के कारण, लेकिन इन बातों का कोई पुख्ता सबूत नहीं मिला।

मर्लिन मुनरो का सांस्कृतिक प्रभाव

मर्लिन आज भी एक Hollywood ग्लैमर आइकन मानी जाती हैं। उनकी फिल्में आज भी पसंद की जाती हैं। Some Like It Hot और Gentlemen Prefer Blondes जैसी फिल्में फिल्मों के इतिहास में अमर हैं। वह सेक्स सिंबल के रूप में पहचान बनीं, लेकिन साथ ही उन्होंने अभिनय के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा साबित की। उनका जीवन आज भी डॉक्यूमेंट्री, फिल्म और किताबों का विषय है। मर्लिन मुनरो सिर्फ एक अभिनेत्री नहीं थीं। वह एक ग्लोबल कल्चर की प्रतीक, संघर्षशील आत्मा और हॉलीवुड के इतिहास की सबसे यादगार हस्तियों में से एक थीं। उन्होंने सफलता, दर्द, प्यार और ग्लैमर हर चीज को अपने रोशन चेहरे के पीछे महसूस किया और आज भी लोग उन्हें आदर्श, प्रेरणा और फिल्मी जिंदगियों की मिसाल के रूप में याद करते हैं।

ओटीटी प्लेटफार्म

देर से मिलता इंसाफ लेकिन असर अधूरा

वध 2 एक गंभीर क्राइम-थ्रिलर फिल्म है, जो यह अहम सवाल उठाती है कि जब इंसाफ मिलने में बहुत देर हो जाए, तो एक आम आदमी के पास क्या विकल्प बचते हैं। फिल्म की मूल भावना "देर से मिला न्याय भी न्याय ही होता है" के विचार के इर्द-गिर्द घूमती है।

कहानी का आइडिया दमदार है और यह समाज व सिस्टम से जुड़े कई अहम सवाल खड़े करती है, लेकिन स्क्रीन पर इसका असर पूरी तरह बन नहीं पाता। फिल्म की शुरुआत धीमी है और पहले हिस्से में कहानी बहुत आराम से आगे बढ़ती है। कई दृश्य अनावश्यक रूप से लंबे लगते हैं और कुछ जगह दर्शक को पहले ही अंदाजा हो जाता है कि आगे क्या होने वाला है। हालांकि जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, सस्पेंस बढ़ता है और दूसरे हिस्से में फिल्म कुछ हद तक पकड़ बनाती है। यदि शुरुआती हिस्से को थोड़ा और टाइट रखा जाता, तो फिल्म कहीं अधिक प्रभावशाली हो सकती थी।

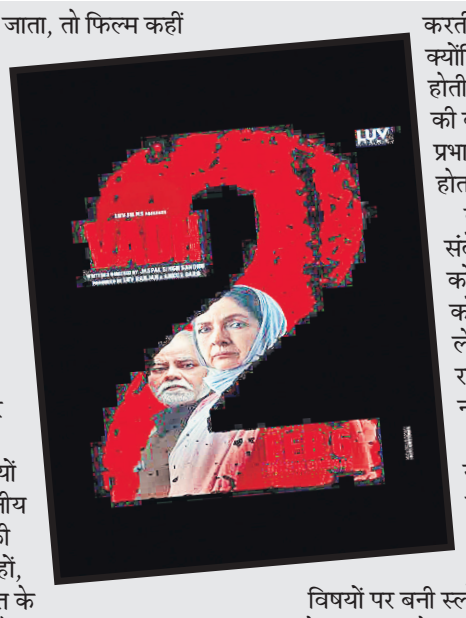

अभिनय के मामले में वध 2 मजबूत नजर आती है। संजय मिश्रा अपने किरदार में पूरी तरह फिट बैठते हैं और बिना किसी अतिरिक्त ड्रामे के भावनाओं को प्रभावी ढंग से सामने रखते हैं। नीना गुप्ता भी अपने रोल में सच्चाई और गहराई लेकर आती हैं। खासकर भावनात्मक दृश्यों में उनका अभिनय सराहनीय है। सहायक कलाकारों की भूमिकाएं भले ही सीमित हों, लेकिन कहानी की जरूरत के हिसाब से वे ठीक बैठती हैं।

तकनीकी पक्ष औसत कहा जा सकता है। सिनेमैटोग्राफी ठीक-ठाक है, लेकिन कुछ नया या यादगार पेश नहीं करती। एडिटिंग और बेहतर हो सकती थी, क्योंकि कई जगह फिल्म खिंची हुई महसूस होती है। बैकग्राउंड म्यूजिक माहौल बनाने की कोशिश करता है, पर वह अपेक्षित प्रभाव छोड़ने में पूरी तरह सफल नहीं होता।

क्लाइमेक्स में फिल्म एक स्पष्ट संदेश देने और नैतिक सवाल उठाने की कोशिश करती है। यह हिस्सा दर्शक को सोचने पर मजबूर जरूर करता है, लेकिन जिस गहरे असर की उम्मीद रहती है, वह पूरी तरह उभरकर सामने नहीं आता।

कुल मिलाकर, वध 2 एक अच्छी सोच और मजबूत अभिनय वाली फिल्म है, लेकिन इसकी धीमी रफ्तार और औसत प्रस्तुति इसकी सबसे बड़ी कमजोरियां हैं। यदि आपको गंभीर विषयों पर बनी स्लो-बर्न थ्रिलर फिल्में पसंद हैं और आप तेज-तर्रार मनोरंजन की अपेक्षा नहीं रखते, तो यह फिल्म एक बार देखी जा सकती है।

समीक्षक-प्रदीप शर्मा

जिंदगी का सफर

'मिस्ट्री गर्ल' साधना

भारतीय सिनेमा के स्वर्ण युग की सबसे चमकती सितारों में से एक, साधना 1941 में पैदा हुई थीं। कराची में जन्मी साधना का परिवार विभाजन के बाद मुंबई आकर बस गया था। उनके पिता, प्रसिद्ध अभिनेत्री साधना बोस के प्रशंसक थे, उन्हीं के नाम पर उन्होंने अपनी बेटी का नाम 'साधना' रखा।

साधना ने अपने अभिनय सफर की शुरुआत 1955 में राज कपूर की फिल्म 'श्री 420' के एक गाने 'मुड़ मुड़ के ना देख' में एक कोरस डांसर के रूप में की थी। इसके बाद उन्होंने भारत की पहली सिंधी फिल्म 'अबाना' (1958) में काम किया, जिसके लिए उन्हें मात्र एक रुपया पारिश्रमिक मिला था।

मुख्य अभिनेत्री के रूप में उनकी पहली फिल्म 'लव इन शिमला' (1960) थी। इसी फिल्म के दौरान उनके माथे को ढकने के लिए हॉलीवुड अभिनेत्री ऑड्रे हेपबर्न से प्रेरित 'फ्रिंज' हेयरस्टाइल अपनाया गया, जो आगे चलकर पूरे भारत में 'साधना कट' के नाम से मशहूर हो गया।

साधना को हिंदी सिनेमा की 'मिस्ट्री गर्ल' कहा जाता था। निर्देशक राज खोसला के साथ उनकी सस्पेंस थ्रिलर फिल्मों-'वो कौन थी?', 'मेरा साया' और 'अनीता' ने उन्हें इस खिताब से नवाजा। उनकी अन्य यादगार फिल्मों में शामिल हैं, 1965) में आई वक्त, जिसमें उन्होंने ग्लैमर और अभिनय का बेहतरीन संतुलन पेश किया। 1963 में आई मेरे महबूब फिल्म में उनकी मुस्लिम लड़की की भूमिका और 'मुस्लिम सोशल' अंदाज बेहद सराहा गया। हम दोनों (1961) फिल्म में देव आनंद के साथ उनकी केमिस्ट्री और फिल्म के गाने आज भी याद किए जाते हैं। 1965 में आई आरजू और 1969 में आई एक फूल दो माली फिल्में उनके करियर की बड़ी हिट्स साबित हुईं।

60 के दशक में साधना सबसे अधिक फीस लेने वाली अभिनेत्रियों में से एक थीं। थायराइड की बीमारी के कारण उनकी आंखों की बनावट में बदलाव आया, जिसके चलते उन्होंने समय से पहले ही फिल्मों से दूरी बना ली। 1974 में फिल्म 'गीता मेरा नाम' के निर्देशन और अभिनय के बाद उन्होंने पूरी तरह से संन्यास ले लिया, क्योंकि वह अपनी 'ग्लैमरस' छवि को बरकरार रखना चाहती थीं और मां या भाभी के सहायक रोल नहीं करना चाहती थीं। 25 दिसंबर 2015 को साधना का निधन हो गया। साधना न केवल अपनी खूबसूरती और फैशन सेंस के लिए याद की जाती हैं, बल्कि अपनी गंभीर और प्रभावशाली भूमिकाओं के कारण भी भारतीय सिनेमा के इतिहास में अमर रहेंगी।

कॉमेडी के बीच क्यूट सा लव

लोकप्रिय टीवी शो 'भाबीजी घर पर हैं!' अब बड़े पर्दे पर अपनी कॉमिक दुनिया का विस्तार करने जा रहा है। जी स्टूडियोज और संजय कोहली द्वारा प्रस्तुत, संजय कोहली व बिनैफर कोहली के निर्माण में बनी फिल्म 'भाबीजी घर पर हैं!-फन ऑन द रन' दर्शकों के लिए हास्य, भागदौड़ और मनोरंजन से भरपूर सफर लेकर आ रही है। इसी बीच फिल्म का रोमांटिक गीत 'मनजोगी' रिलीज किया गया है, जो फिल्म की तेज रफ्तार कॉमेडी के बीच एक भावनात्मक ठहराव का एहसास कराता है।

'मनजोगी': शोर के बीच सुकून की धुन

जहां फिल्म हंसी, उलझनों और मजेदार परिस्थितियों से भरपूर है, वहीं 'मनजोगी' कहानी में एक कोमल और आत्मीय रंग घोलता है। सोनू निगम की मखमली आवाज में गाया गया यह गीत प्रेम को उसके सरल और निष्कपट रूप में प्रस्तुत करता है। यह गाना न तो दिखावटी है और न ही भारी-भरकम शब्दों का सहारा लेता है, बल्कि अपनी सादगी से सीधे दिल में उतरता है। गीत के बोल गुलाम मोहम्मद खावर ने लिखे हैं, जो भावनाओं को सहज शब्दों में पिरोते हैं, जबकि संगीत विशाल शेल्के का है, जिसकी धुन धीरे-धीरे मन में बस जाती है। 'मनजोगी' उन गीतों में से है, जो सुनते ही नहीं, बल्कि महसूस किए जाते हैं।

फिल्म में सितारों की जमावट

'भाबीजी घर पर हैं!-फन ऑन द रन' का निर्देशन शशांक बाली ने किया है। फिल्म में शुभांगी अत्रे, विदिशा श्रीवास्तव, आसिफ़ शेख, रोहिताश्व गौर, रवि किशन, मुकेश तिवारी और निरहुआ अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। टीवी पर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करने वाले ये किरदार अब बड़े पर्दे पर नए अंदाज में हंसी का तड़का लगाने को तैयार हैं।

सोनू निगम की आवाज में नया रंग

हाल ही में गंभीर और भावनात्मक प्रोजेक्ट्स में अपनी दमदार गायकी से प्रभावित करने के बाद, सोनू निगम 'मनजोगी' के जरिये एक हल्की-फुल्की और रोमांटिक सिनेमाई दुनिया में लौटते हैं। यह गीत साबित करता है कि उनकी आवाज हर तरह की भावनाओं को समान सहजता से व्यक्त करने में सक्षम है। 'मनजोगी' में उनकी गायकी प्रेम की मासूमियत और ठहराव को खूबसूरती से उभारती है।

छोटे पर्दे से बड़े पर्दे तक का सफर

'भाबीजी घर पर हैं!' का सफर भारतीय टेलीविजन के सबसे लोकप्रिय कॉमेडी शोज में गिना जाता है। यह टीवी कार्यक्रम वर्ष 2015 में शुरू हुआ और अपनी सादगी, देसी हास्य और यादगार किरदारों के जरिये देखते ही देखते दर्शकों के दिलों में खास जगह बना गया। छोटे पर्दे पर वर्षों तक लगातार सफलता के बाद अब यही चर्चित दुनिया बड़े पर्दे पर एक नए विस्तार के साथ दस्तक दे रही है। टीवी की सीमित लोकेशन्स और एपिसोडिक कहानियों से निकलकर, 'भाबीजी घर पर हैं! – फन ऑन द रन' सिनेमाई पैमाने पर कहानी, किरदारों और मनोरंजन को और व्यापक रूप में पेश करती है। यह फिल्म न सिर्फ़ शो के पुराने प्रशंसकों के लिए एक खास अनुभव है, बल्कि उन दर्शकों के लिए भी एक नया प्रवेश द्वार खोलती है, जो पहली बार इस कॉमिक दुनिया से रूबरू होंगे।

अंगूरी भाभी और शुभांगी अत्रे का भावनात्मक रिश्ता

फिल्म के साथ-साथ शुभांगी अत्रे भी इन दिनों चर्चा में हैं। 'अंगूरी भाभी' के किरदार से घर-घर पहचान बनाने वाली शुभांगी अत्रे ने हाल ही में एक इंटरव्यू में अपने करियर और इस किरदार को लेकर भावनात्मक बातें साझा कीं। उन्होंने बताया कि लगभग नौ साल से अधिक समय तक अंगूरी भाभी को निभाना उनके लिए एक यादगार और आत्मीय अनुभव रहा है। उनके अनुसार, यह किरदार अब उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन चुका है। उन्होंने इसे कभी चुनौती नहीं माना, बल्कि एक जिम्मेदारी के रूप में निभाया और पूरे समर्पण के साथ इस किरदार को दर्शकों के दिलों तक पहुंचाया।

आखिरी सांस तक करना चाहती हूं अभिनय

शुभांगी अत्रे का कहना है कि कैमरे के सामने रहना उनके लिए सिर्फ काम नहीं, बल्कि प्रेम है। उन्होंने स्पष्ट किया कि अभिनय ही उनकी असली पहचान है और वे चाहती हैं कि जीवन की आखिरी सांस तक अच्छे और सार्थक किरदार निभाती रहें। यह जुनून और ईमानदारी ही उन्हें इंडस्ट्री में अलग पहचान देती है।

फिल्म 'भाबीजी घर पर हैं! – फन ऑन द रन' सिर्फ हंसी-मज़ाक तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सकारात्मक ऊर्जा और आनंद का संदेश भी देती है। इसी भावना से प्रेरित होकर फिल्म के प्रचार से जुड़ी संस्थाओं ने भी स्वस्थ जीवनशैली और खुशहाल मन को महत्व देने की बात कही है। कलाकारों का मानना है कि जब मन प्रसन्न होता है, तभी मनोरंजन का असली आनंद मिलता है।